School of Humanities

Certificate

I hereby declare that the short synopsis **"प्रस्थानत्रयी में शाङ्करभाष्य प्रोक्त मोक्ष के स्वरूप की साम्प्रतिक उपादेयता-:एक अध्ययन"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **Sanskrit and Prakrit Language** under School of Humanities of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2024.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. Vinod Kumar Gupta and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

Vimal Kumar
En. No.- 2101003

Research Supervisor:-

Prof. Vinod Kumar Gupta
Faculty of Sanskrit

Prof. Satyapal Tiwari
Director of School of Humanities

07/08/25
Prof. P. K. Pandey
Director, R&D Cell

"प्रस्थानत्रयी में शाङ्करभाष्य प्रोक्त मोक्ष के स्वरूप की साम्प्रतिक उपादेयता-:एक अध्ययन"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN SANSKRIT AND PRAKRIT LANGUAGE

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Vimal Kumar

En. No.- 2101003

Under the Supervision of

Prof. Vinod Kumar Gupta

Faculty of Sanskrit

School of Humanities

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

ABSTRACT :-

भारतीय दर्शन में मुख्यतः दो धाराएँ दिखाई देती हैं – आस्तिक दर्शन और नास्तिक दर्शन। आस्तिक दर्शन के अन्तर्गत सांख्य, योग , न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा। उत्तर मीमांसा को ही वेदान्त के नाम से जानते हैं। तथा नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत जैन , बौद्ध और चार्वाक की गणना होती है। प्रायः सभी भारतीय दर्शनों में आत्मा, ब्रह्म, जीव , जगत्, ईश्वर, कर्म , कर्म सिद्धान्त एवं मोक्ष का बड़ी सूक्ष्मता से चिन्तन होता है। मोक्ष भारतीय संस्कृति का चरम लक्ष्य है, अतः दर्शनों में मोक्ष के बृहद् चिन्तन एवं उनकी साम्प्रतिक उपादेयता के विषय में अध्ययन किया जाना है। इसी को ध्यान में रखकर प्रस्थानत्रयी में "शाङ्करभाष्य प्रोक्त मोक्ष के स्वरूप की साम्प्रतिक उपादेयता:- एक अध्ययन" विषय पर छः अध्यायों में अध्ययन किया जाएगा।

Keywords :- *प्रस्थानत्रयी; मोक्ष, मुक्ति, भारतीयदर्शन, संसार, वेदांत, निःश्रेयस् निर्वाण, आत्म-साक्षात्कार, आध्यात्मिकता, नैतिकता।*

1. Introduction :-

वर्तमान समय में प्रत्येक जीव मोह या अज्ञान ग्रस्त होकर , **पदार्थ** , **सम्पत्ति** , **सत्ता** , व **शरीर** आदि में सुखानुभूति आदि प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहता है । परन्तु बुध्दि पूर्वक विचार करने पर ज्ञात होता है कि सर्वसत्ता क्षणभङ्गुर दुःखदायी व नाशवान है । यही कारण है कि वर्तमान समय में प्रत्येक जीव अलौकिक सुख एवं शान्ति की खोज में भटक रहा है । वस्तुतः यही भटकाव ही हमारे पूर्वजों के दार्शनिक चिन्तन की आधारशिला रही है ।

भारतीय दर्शन मुख्यतः दो शाखाओं में विभक्त है -

आस्तिक और नास्तिक ।

आस्तिक दर्शन में जहाँ छः मुख्य दर्शनों का प्रादुर्भाव हुआ तो वहीं नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत तीन दर्शनों का विकास हुआ ।

सांख्य , योग , न्याय ,वैशेषिक , मीमांसा एवं **वेदान्त** जहाँ आस्तिक दर्शनों का प्रतिनिधित्व करते हैं तो वहीं **जैन , बौध्द , चार्वाक** नास्तिक दर्शनों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

लगभग सभी भारतीय दर्शनों में **आत्मा , ब्रह्म , जीव , जगत् , कर्म , कर्मफल** , इत्यादि विषयों का गम्भीरता पूर्वक विवेचन उपलब्ध होता है । इतना ही नहीं इनके अतिरिक्त भी संस्कृत वाङ्गमय में अन्य बहुत से ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं , जिनमें दार्शनिक तत्त्वों का बहुतायत विवेचन किया गया है ।

प्रस्थानत्रयी भारतीय दार्शनिक तत्त्वों पर विचार करने के लिए अत्यन्त सुलभ माध्यम है जिसमें **आत्मा , ब्रह्म , जीव , जगत् , ईश्वर , कर्म** , **कर्मसिध्दान्त** तथा **मोक्ष** का व्यापक रूप से चिन्तन किया गया है ।

प्रस्थानत्रयी में मुख्य रूप से **उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र** एवं **श्रीमद्भगवद्गीता** सम्मिलित है।

भगवान् शङ्कराचार्य ने प्रस्थानत्रयी के तीनों भागों पर बृहद् रूप से भाष्य लिखा है । यही कारण है कि वर्तमान समय में प्रस्थानत्रयी की महत्ता और भी अधिक बढ़ गयी है । जिन्होंने **उपनिषदों** , **ब्रह्मसूत्र** तथा **श्रीमद्भगवद्गीता** में वर्णित

दार्शनिक तत्वों पर पृथक्रूप से चिन्तन किया है।

प्रस्तुत शोध विषय "प्रस्थानत्रयी में शाङ्करभाष्य प्रोक्त मोक्ष के स्वरूप की साम्प्रतिक उपादेयता - एक अध्ययन" के अनुसार हमारे शोध का प्रमुख विषय आदि शङ्कराचार्य के द्वारा बताए गए प्रस्थानत्रयी में मोक्ष के स्वरूप का निरूपण करना है। एतदर्थ इसी मोक्ष तत्व का महत्ता से विचार करना हमारा परम लक्ष्य है। इसी मोक्ष को कहीं पर निःश्रेयस् तो कहीं पर कैवल्य इत्यादि नामों से जाना जाता है।

सभी भारतीय दर्शनों में जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष को ही स्वीकार किया गया है। जहाँ पर पहुँचकर व्यक्ति परम आनन्द को प्राप्त करता है और पुनः लौटकर भवबन्धनचक्र में नहीं फँसता है। यही कारण है कि प्राचीन समय से ही भारतीय विचारकों का मोक्ष विषयक जिज्ञासा रही है। यही जिज्ञासा ही मोक्ष के विविध स्वरूपों (पक्षों) को प्रकट करने का प्रमुख कारण रहा है।

2. Literature Review :-

प्रस्तावित शोध विषय से सम्बन्धित शोध कार्य को शोधार्थी ने पूर्व में हुए शोध कार्यों को विभिन्न अन्तर्जालीय (आनलाइन) तथा ऑफलाइन स्रोतों से जानकारी एकत्र किया। जहाँ निम्नलिखित विषयों पर पूर्ववर्ती शोध कार्यों का विवरण प्राप्त हुआ।

- The concept of Atman in the Principal upnisads, Baldevraj Sharma, Delhi University, 1972.
- Prasthantrayi Mein Sagun Braham Ka Swaroop ,Singh Subhash,University of Allahabad,2023
- Prasthantrayi Shankarbhasyadhunik vigyanyoh vyasti samasti swarup nirupnam,Mishra Sarvesh Kumar, Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University,2018
- Prasthantrayi shankarbhasyokt prabandhsidhantanam samikshnam,Sharma Yogita, 2018
- Prasthantrayi shakasbhasvya me aachar mimasa , Kumar Bibhujit ,University of Delhi,2012

उपर्युक्त शोध-कार्यों पर विचार करने के अनन्तर मोक्ष के सन्दर्भ में कतिपय विशिष्ट दृष्टियाँ प्राप्त हुई,जिसके कारण शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध विषय को चुना गया। उपर्युक्त इन सभी शोध कार्यों में मोक्ष के स्वरूप का साम्प्रतिक विवेचन उपलब्ध नहीं हुआ है। यही कारण है कि हमने अमुक विषय पर गहनता पूर्वक विचारोपरान्त शोध कार्य करने का निर्णय लिया। निःसन्देह यह मोक्ष विषयक शोध कार्य सामान्य जनमानस की ज्ञान पीपासा को शान्त करने में सहायक सिद्ध हो। ऐसा शोधार्थी का प्रयास रहेगा।

3. Description Broad Area :-

प्रस्तावित शोधविषय में सम्यक् तथा सारगर्भित प्रतिपादन के लिए मेरे द्वारा विभिन्न **विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों , पत्र , पत्रिकाओं , आनलाइन** , तथा **आफलाइन** , सामग्रियों की सहायता ली जाएगी तथा शोधप्रबन्ध के सम्यक् प्रतिपादन के लिए सर्वप्रथम शोध की सीमाओं का निर्धारण किया जाएगा, जिससे शोधकार्य को व्यर्थ के भटकाव से बचाया जा सके और शोध को सही दिशा दी जा सके।

प्रस्तावित अध्याय विभाजन

प्रथमाध्याय

- प्रस्थानत्रयी तथा शङ्कराचार्य : एक परिचय

1. प्रस्थानत्रयी का सामान्य परिचय

1.1.उपनिषद्

1.1.1ईशोपनिषद्

1.1.2 केनोपनिषद्

1.1.3 कठोपनिषद्

1.1.4 प्रश्नोपनिषद्

1.1.5 मुण्डकोपनिषद्

1.1.6 माण्डूक्योपनिषद्

1.1.7 तैत्तरीयोपनिषद्

1.1.8 ऐतरेयोपनिषद्

1.1.9 छान्दोग्योपनिषद्

1.1.10 वृहदारण्यकोपनिषद्

1.1.11 श्वेताश्वतरोपनिषद्

1.2 ब्रह्मसूत्र का सामान्य परिचय

1.3 श्रीमद्भगवद्गीता का संक्षिप्त विवेचन

1.3.1. गीता में प्रतिपादित तत्वमीमांसा

1.3.2. गीता में प्रतिपादित योगचिन्तन

1.3.3. ज्ञान योग

1.3.4 कर्म योग

1.3.5 भक्ति योग

द्वितीयाध्याय

- ब्रह्मसूत्र में शाङ्करभाष्य प्रोक्त मोक्ष का स्वरूप

  1. ब्रह्मसूत्र एवं महर्षि बादरायण
  2. ब्रह्मसूत्र में वर्णित विभिन्न सम्प्रदाय
  3. ब्रह्मसूत्र में मोक्ष का स्वरूप
  4. ब्रह्मसूत्र का मूल्यांकन

तृतीयाध्याय

- श्रीमद्भगवद्गीता में शाङ्करभाष्य प्रोक्त मोक्ष का स्वरूप

  1. श्रीमद्भगवद्गीता एवं वेदव्यास (शां.भा.)
  2. श्रीमद्भगवद्गीता मे वर्णित विषय (शां.भा.)
  3. श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्ष का स्वरूप (शां.भा.)
  4. श्रीमद्भगवद्गीता का मूल्यांकन (शां.भा.)

चतुर्थाध्याय

- उपनिषदों में शाङ्करभाष्य प्रोक्त मोक्ष का स्वरूप

  1. उपनिषद् शब्द की व्याख्या
  2. उपनिषदों का कालक्रम
  3. उपनिषदों का वर्गीकरण
  4. उपनिषदों की संख्या
  5. उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय

5.1 ब्रह्म

5.2 सृष्टिविद्या

5.3 आत्मा या जीव

5.4 ब्रह्म और जीव का सम्बन्ध

6.भाषा शैली

6.1प्रतिगमन शैली

6.2सूत्र शैली

6.3व्युत्पत्ति शैली

6.4कथा शैली

6.5दृष्टान्त शैली

6.6समन्वय शैली

6.7पहेली शैली

6.8आत्मोक्ति शैली

6.9संवाद शैली

6.10अव्यक्त शैली

7.उपनिषदों का महत्व

8. उपनिषदों में मोक्ष का स्वरूप(शां.भा.)

पञ्चमाध्याय

❖ भारतीय दर्शन में प्रस्थानत्रयी की साम्प्रतिक उपादेयता का वैशिष्ट्य

1. भारतीय दर्शनों का सामान्य परिचय
2. भारतीय दर्शन में प्रस्थानत्रयी का महत्व
3. भारतीय दर्शन का वैशिष्ट्य

षष्ठाध्याय

❖ उपसंहार

4. Objectives of the Study :-

प्रस्तावित शोधविषय का प्रमुख उद्देश्य यह होगा कि शाङ्करभाष्य प्रोक्त प्रस्थानत्रयी में वर्णित मोक्ष तत्त्व की साम्प्रतिक उपादेयता का गहन अध्ययन करके उसमें निहित गूढ़ दार्शनिक विचारों को उजागर किया जाएगा। जिससे सामान्य जनमानस सहज रूप से शाङ्करभाष्य प्रोक्त प्रस्थानत्रयी में वर्णित मोक्ष के साम्प्रतिक उपादेयता के स्वरूप से अवगत हो सके।

5. Research Methodology :-

प्रस्तावित शोध कार्य में मुख्यतः वर्णनात्मक , विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पध्दति का आश्रय लेकर **"प्रस्थानत्रयी में शाङ्करभाष्य प्रोक्त मोक्ष के स्वरूप की साम्प्रतिक उपादेयता - एक अध्ययन "** इस विषय में दार्शनिक दृष्टि से समीक्षात्मक अध्ययन किया जाएगा।

6. Expected Outcome of the Research :-

प्रायः समस्त भारतीय दर्शनों में मोक्ष को चरम लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया गया है, भले ही इसका नाम अलग-अलग हों। भारतीय दर्शन के प्रमुख प्रस्थान उपनिषद्,ब्रह्मसूत्र एवं श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्ष के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। जिस पर पर्याप्त अध्ययन किया जा चुका है , किन्तु आचार्य शङ्कर द्वारा उक्त प्रस्थानों पर किये गए भाष्य में मोक्ष का क्या स्वरूप है,इस पर चर्चा नही प्राप्त होती। अतः शाङ्करभाष्य में मोक्ष के स्वरूप का अध्ययन शोधात्मक दृष्टि से आवश्यक है।

References :-

प्राथमिक स्रोत

- ईशादि नौ उपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० २०६६
- ईशादि नौ उपनिषद् , गीता प्रेस गोरखपुर ,81वाँ संस्करण ,संवत् - 2079
- ईशावास्योपनिषद् , डा0 शशि तिवारी , भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी , 12वाँ संस्करण , 2024
- ईशादिदशोपनिषद् , मोतीलाल बनारसीदास , भारतीयाधिशासन संरक्षकतायाम् , 1964
- ईशादि नौ उपनिषद् , व्याख्याकार- हरिकृष्णदास गोयन्दका, घनश्यामदास जालान गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण - सम्वत् २०१४
-
- उपनिषद् शाङ्करभाष्य , गीता प्रेस गोरखपुर , 1421 , 2015
- उपनिषदों की भूमिका , पं0 राजाराम , बाम्बे मैग्जीन प्रेस लाहौर , द्वितीय संस्करण , संवत् - 1980
- उपनिषदों की भूमिका , डा0 राधाकृष्णन , राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली , 7वाँ संस्करण , 1985
- उपनिषत्सञ्चयनम् , अनुवादक - आचार्य केशवलाल वि. शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान ३८ यू. ए. जवाहर नगर, बंगलो रोड, दिल्ली - ११०००७, संस्करण - २०१५
- एकादशोपनिषद् - डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार, विजयकृष्ण लखनपाल, W-७७, ए ग्रेटर कैलाश (१) नई दिल्ली- ४८
- ऐतरेयोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्य सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० २०६१
- कल्याण उपनिषद्-अङ्क, सम्पादक - हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं चिम्मनलाल गोस्वामी घनश्यामदास जालान गीताप्रेस, गोरखपुर

❖ कौषीतकिब्राह्मणोपनिषद् Upnishad. SHDVEF. (n.d.). Retrieved July 23, 2022, from https://www.shdvef.com/religious-scriptures/upnishad/

❖ गीता भाष्यम् , विद्वान् सी0 आर्0 चतुर्वेदी प्रदीप सिंहाचार्य , पूर्णप्रज्ञविद्यापीठम् बैङ्ग्लूरू , 28वाँ संस्करण , 2014

❖ चतुःसूत्रीब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्य , स्वामी परमानन्द भारती , चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी , द्वितीय संस्करण , 2003

❖ तैत्तिरीयोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्य सहित), घनश्यामदास जालान गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण- २०००

❖ प्रस्थानत्रयी दर्शन , डा0 विश्वम्भर दयाल अवस्थी , सरस्वती प्रकाशन मन्दिर इलाहाबाद , प्रथम संस्करण ,1992

❖ प्रश्नोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्य सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० २०६१

❖ बृहदारण्यकोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित), घनश्यामदास जालान गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण - १९९९ छान्दोग्योपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्य सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० २०६०

❖ ब्रह्मसूत्र ,स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान , 6वाँ संस्करण , 2007

❖ बृहदारण्यकोपनिषत् (आनन्दगिरिकृतटीकासंवलित शाङ्करभाष्यसमेता) - स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज एवं स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज, टीकाकार एवं सम्पादक - डॉ. उमेशानन्द शास्त्री, श्री कैलाश आश्रम शताब्दी समारोह महासमिति मुनि की रेती, ऋषिकेश, संस्करण - वि. सं० २०३६

❖ ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य , आचार्य विश्वेश्वर सिध्दान्तशिरोमणि , चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी , प्रथम संस्करण , 1966

❖ भारतीय दर्शन की रूपरेखा , प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा , चौखम्भा ओरियन्टालिया नई दिल्ली , दूसरा संस्करण , 1979

❖ भारतीय दर्शन की रूपरेखा , बलदेव उपाध्याय , चौखम्भा ओरियन्टालिया नई दिल्ली , चतुर्थ संस्करण , 1988

❖ भारतीय दर्शन का इतिहास , डा0 एस0 एन0 दासगुप्त , राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी , 12वाँ संस्करण , 1995

❖ मुण्डकोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० १९९२

❖ श्रीमद्भगवद्गीता , जयदयाल गोयन्दका , गीता प्रेस गोरखपुर, 83वाँ

संस्करण, संवत् - 2077

- श्रीमद्भगवद्गीता शाङ्करभाष्य / श्री हरिकृष्णदास गोयन्दका / गीता प्रेस गोरखपुर , 10वाँ संस्करण , संवत् - 2010
- श्वेताश्वतरोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० १९९५
- १०८ उपनिषद् (ब्रह्मविद्याखण्ड) - पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उ.प्र.), संस्करण - २००५
- १०८ उपनिषद् (ज्ञानखण्ड) - पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उ.प्र.), संस्करण - २००५
- १०८ उपनिषद् (साधनाखण्ड) - पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उ.प्र.), संस्करण - २००५

द्वितीयक स्रोत

- उपनिषद् प्रकाश - डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार, संस्कार प्रकाशन ४४०८, नई सड़क दिल्ली - ११०००६, संस्करण - २०००
- उपनिषद् दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण, आर.डी. रानाडे, अनु. रामानन्द तिवारी, प्रका. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, १९७१
- उपनिषद् रहस्य (एकादशोपनिषद्) - स्व. श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क दिल्ली ११०००६, संस्करण - २०१४
- उपनिषदों की भूमिका, डॉ. एस. राधाकृष्णन्, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, १९८१
- उपनिषद् वाङ्मय : विविध आयाम, वेदवती वैदिक, १९९७
- उपनिषदों के निर्वचन - डॉ. वेदवती वैदिक, नाग पब्लिशर्स ११-ए (यू. ए.) जवाहर नगर, दिल्ली ११०००७, संस्करण - २००३ ई.

- तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यवार्तिक - सुरेश्वराचार्य, अनुवादक - राधेश्याम शास्त्री, मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशन्स १ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-२
- बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम् - श्री पण्डित शिवशङ्कर शर्मा काव्यतीर्थ, हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्झर रोहतक, संस्करण - २००० ई.
- सिर्रे अकबर सहित सानुवाद उपनिषत्-समुच्चय (प्रथम खण्ड) - शाहजादः मुहम्मद दाराशिकोह, सम्पादक एवं अनुवादक - डॉ. हर्षनारायण, भुवन वाणी ट्रस्ट 'प्रभाकर निलयम्' ४०७/१२८ चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३, संस्करण - १९७५ ई.
- The Principal Upanisads, S.Radhakrishnan, Harper Collins Publishers, India, New Delhi: 1953.
- The Upanisads, Max Mueller, translator, part I, Dover Publications, Inc. New York: 1962

कोश ग्रन्थ

- औपनिषदिक-पदानुक्रम-कोषः (प्रथम भाग) - प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री एवं डॉ. विजय कुमार त्यागी, सम्पादक - निशान्त कुमार, परिमल पब्लिकेशन २७/२८, शक्तिनगर, दिल्ली- ११०००७, संस्करण - २०१५ ई.
- प्रस्थानत्रयी-पदानुक्रम-कोषः - प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री एवं डॉ. विजय कुमार त्यागी, सम्पादक - निशान्त कुमार, परिमल पब्लिकेशन २७/२८, शक्तिनगर, दिल्ली- ११०००७, संस्करण - २०१४ ई.
- वैदिक-पदानुक्रमकोश (मौरिस ब्लूमफील्ड का देवनागरी संस्करण), सम्पादक - सुनील कुमार उपाध्याय, परिमल पब्लिकेशन २७/२८, शक्तिनगर, दिल्ली- ११०००७, संस्करण - २००४ ई.

- संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, सम्पादक - स्वर्गीय चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा तथा पण्डित तारिणीश झा, रामनारायणलाल बेनीप्रसाद प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता इलाहाबाद - २, संस्करण - १९७१ ई.
- वैदिक कोश (भाग १) - पं० चन्द्रशेखर उपाध्याय एवं श्री अनिल कुमार उपाध्याय, नाग प्रकाशक ११ ए/यू. ए. जवाहर नगर, दिल्ली- ११०००७, संस्करण - १९९५ ई.
- अमरकोष, अमरसिंह, व्याख्याकार एवं सम्पादक - पण्डित हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, पो० बॉ० नं० ११३९ के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेन (गोलघर समीप मैदागिन) वाराणसी- २२१००१ (भारत), संस्करण - वि० सं० २०७२
- संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश, वामन शिवराम आप्टे, सम्पादक - डॉ. उमा प्रसाद पाण्डेय, कमल प्रकाशन १७००, कूँचा दखनी राय, नियर पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली- ११०००२
- वाचस्पत्यम् , तर्कवाचस्पति तारानाथ भट्टाचार्य, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी-१, १९६२
- शब्दकल्पद्रुमः, स्यार राजा राधाकान्तदेव बाहादुर, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी-१, १९६७

अन्तर्जालीय स्रोत

- https://www.shdvef.com/religious-scriptures/upnishad/
- www.sanskritlibrary.org

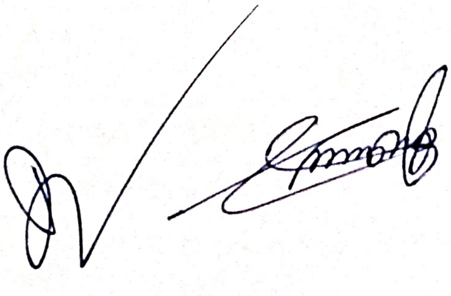

- www.wikipedia.com
- www.hindunet.com
- www.sanskritvishvam.com
- www.archive.org
- www.lib.jnu.ac.in
- www.ndl.iitkgp.ac.in
- https://pib.gov.in
- www.india.gov.in
- www.wfp.org
- www.fao.org
- https://dfpd.gov.in/nfsa-act-hi.htm

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language: **Hindi**

Submission Information

Author Name	Vimal Kumar
Title	[illegible]
Paper/Submission ID	3086031
Submitted by	[illegible]@gmail.com
Submission Date	2023-05-[illegible] 12:08:00
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

0	0	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE